3

पहली कक्षा का शिक्षक

लता पाण्डे*

माँ की गोदी से निकलकर बच्चा जब पहली बार स्कूली जीवन में कदम रखता है, तो उसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ आ खड़ी होती हैं। नए-नए लोगों से सामंजस्य स्थापित करना, नए परिवेश में स्वयं को ढालना आदि। वहीं पहली कक्षा के शिक्षक के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। स्कूली दुनिया में पहली बार कदम रखने वाले बच्चे को स्कूल में बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। लेकिन शिक्षक कुछ बातों के प्रति सजग रहे तो इन सभी चुनौतियों का सामना कर सकता है। कैसा हो पहली कक्षा का शिक्षक? जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

पहली कक्षा ही वह कक्षा है जिसमें अधिकतर बच्चे स्कूली दुनिया में पहला कदम रखते हैं। और पहली कक्षा ही वह कक्षा है जो अधिकतर बच्चों का किताबों की दुनिया से परिचय कराती है। यही वह कक्षा है जो बच्चों के मन में पढ़ाई-लिखाई, किताबों, स्कूल और शिक्षकों के प्रति एक नज़रिया विकसित करती है। यह नज़रिया अगर सकारात्मक होता है तो पढ़ने की दहलीज़ पर कदम रखने वाला बच्चा स्कूली दुनिया में प्रविष्ट होकर सफ़लता की सीढ़ियाँ लांघता चला जाता है। इसके विपरीत स्कूल के प्रति बच्चे का रवैया यदि पहली कक्षा में नकारात्मक बन जाता है तो बच्चे को शाला त्यागते देर नहीं लगती और कई बार तो पहली कक्षा ही आखिरी कक्षा बनकर रह जाती है।

घर की बोली को कक्षा में स्थान

बच्चे को स्कूल में बनाए रखने में शिक्षक की भूमिका काफ़ी महत्वपूर्ण रहती है। पहली कक्षा के शिक्षक की ज़िम्मेदारी अन्य कक्षाओं के शिक्षकों के मुकाबले काफ़ी चुनौतीपूर्ण है। माँ की ममतामयी गोद से निकलकर विद्यालय में कदम रखने वाले इन नन्हे-मुन्नों को परिवार के सदस्यों का सा स्नेह देना, उसके साथ घुल-मिल जाना पहली चुनौती है। अकसर बच्चे जब अपने घर की बोली में कक्षा में कोई बात कहते हैं तो शिक्षक द्वारा उसे तुरंत टोक दिया जाता है। भाषा की कक्षा में तो शिक्षक इस बात पर विशेष रूप से ज़ोर देता है कि बच्चे मानक भाषा का व्यवहार करें। मानक भाषा तो बच्चे धीरे-धीरे सीख ही लेंगे पर पहली कक्षा में बच्चे पर मानक भाषा में ही बात करने के दवाब का दुष्परिणाम यह होता है कि बड़े ही उत्साह से अपनी बात कहने को तत्पर बच्चे चुप हो जाते हैं। मानक भाषा में बात करने में असमर्थ बच्चे का आत्मविश्वास लड़खड़ा जाता है। लड़खड़ाते आत्मविश्वास वाले बच्चे फिर कभी मुखर होने का साहस नहीं जुटा पाते। हमारी

* *एसोसियेट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग नयी दिल्ली-110016

बहुभाषिक संस्कृति हमारी पहचान है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की सिफारिश करती है। बच्चे की घर की बोली को सम्मान देकर ही बच्चे के आत्मसम्मान को बनाए रखा जा सकता है। पहली कक्षा का शिक्षक बच्चे को अपने शब्दों, अपनी बोली में बोलने का अवसर देकर अत्यंत सहजता से उसके मन को भी स्पर्श कर सकता है।

पूर्वग्रहों से मुक्त शिक्षक

कई बार पूर्वग्रहों से युक्त होने के कारण शिक्षक अनजाने में बच्चे के साथ नांइसाफी कर जाते हैं। शिक्षक का पक्षपातपूर्ण रवैया बच्चे को स्कूल से विमुख कर देता है। इसलिए उसे जाति, धर्म, वर्ग आदि के किसी भी पूर्वग्रह से स्वयं को मुक्त रखते हुए कक्षा के प्रत्येक बच्चे के करीब पहुँचना है।

प्यार, भरोसा और आत्मीयता

शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की, चाहे वह किसी धर्म–जाति, वर्ग का हो, क्षमता पर भरोसा जताना है। हर बच्चे को विश्वास दिलाना है कि हाँ, मैं सीख सकता हूँ, मैं पढ़–लिख सकती हूँ। बच्चे के सिर पर रखा शिक्षक का प्यार भरा हाथ उसे भरोसा दिलाएगा कि हाँ, मेरे शिक्षक मुझे प्यार करते हैं, मुझपर विश्वास करते है।

शारीरिक/मानसिक चुनौती वाले बच्चे यदि कक्षा में हैं तो उन्हें भी हर गतिविधि में अन्य बच्चों के साथ सम्मिलित कर ही समेकित शिक्षा को सही मायनों में अर्थ दिया जा सकता है। ऐसे बच्चों के लिए कक्षा में बाकी बच्चों का दोस्त बनने के मौके पैदा करें ना कि सहानुभूति का पात्र। ऐसे बच्चों की मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था करने का हर संभव प्रयास करें।

कक्षा का वातावरण

कक्षा का वातावरण बच्चों के मनमुताबिक होगा तो बच्चों का मन लगेगा। शिक्षक के सामने एक बड़ी चुनौती है बच्चों के अनुकूल वातावरण निर्माण करने की। अकसर विद्यालय परिसर में तथा कक्षा के भीतर बड़े–बड़े सूक्ति वाक्य लिखे रहते हैं– विद्याा ददाति विनयम्, अहिंसा परमों धर्मः आदि। इन वाक्यों का बच्चों की वास्तविक ज़िंदगी से कोई मतलब नहीं है। ऐसी लिखित सामग्री बच्चों को अपनी ओर नहीं खींचती। बच्चों की रुचि की मुद्रित सामग्री चारों ओर लगी रहेगी तो बच्चे उसे देखेंगे, अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करेंगे और पढ़ने की दुनिया में कदम रखेंगे। सुंदर चित्र, कोई अच्छा–सा कार्टून, अच्छी–सी कविता, मज़ेदार–सा वाक्य कुछ भी हो सकता है। कोई भी चार्ट या मुद्रित सामग्री लगाते समय ध्यान रखें कि बच्चे उसे आसानी से देख और पढ़ सकें। वह बच्चों की पहुँच के भीतर हो। मुद्रित सामग्री ही नहीं कक्षा में रखी किताबें, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, चॉक सब कुछ ऐसे स्थान में रखे हों जहाँ बच्चों का हाथ आसानी से पहुँच जाए।

कहानी का खज़ाना

बच्चों को कहानी सुनने, कविता गाने में बहुत आनंद आता है। पहली कक्षा के शिक्षक के पास बच्चों के मनपसंद विषयों की कहानियों, कविताओं का अच्छा–खासा ज़खीरा होना चाहिए। कितना अच्छा हो यदि प्रतिदिन कक्षा की शुरुआत रोचक किस्से–कहानी से हो। कहानी का आनंद

बच्चों को दिनभर के लिए उमंग तथा उत्साह से लबालब कर देगा। कहानी का विषय बच्चों की पसंद का और उनके परिवेश से जुड़ा हो। भाषा बच्चों की अपनी हो और कहानी सुनाने का तरीका रोचक हो। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर कहानी सुनाएँ। प्रतिदिन एक कहानी न केवल बच्चे को विद्यालय की ओर आकर्षित करेगी बल्कि शिक्षक से उसका स्नेहिल नाता भी बड़ी सरलता से बन जाएगा। कहानी के बाद बच्चों से संवाद करें। विभिन्न भाषायी कौशल कहानी के माध्यम से बड़ी सहजता से बच्चों में विकसित किए जा सकते हैं। साथ ही बच्चों से भी कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

कविता का आनंद

लय, गति, तुक के कारण कविता बच्चे बहुत जल्दी याद कर लेते हैं और गाते हैं। बच्चों की रुचि के विषयों पर आधरित कविता सुनाएँ और बच्चों को साथ में दोहराने के लिए कहें। कविता की दो-चार पंक्तियाँ सुनाने के बाद बच्चों से उसे आगे बढ़ाने की गतिविधि करवाई जा सकती है जैसे -

पैसा पास होता
तो चार चने लाते
चार चने में से एक
कौवे को खिलाते
तो बड़ा मज़ा आता
बड़ा मज़ा आता
जब काँव-काँव चिल्लाता
पैसा पास होता
तो चार चने लाते
चार चने में से एक
मुर्गे को खिलाते
मुर्गे को खिलाते
तो बड़ा मज़ा आता
बड़ा मज़ा आता
जब..

बच्चा अपने आप जोड़ देगा कुकड़ूँ कूँ चिल्लाता।

समय-सारिणी में लचीलापन

कविता-कहानी सुनाने के दौरान इनका भरपूर आनंद बच्चों को लेने दें। अगर बच्चे कहानी पर चर्चा जारी रखना चाहते हैं तो ऐसा करने दें। इसका मतलब है कि उन्हें कहानी में रस मिला। यह सोचकर तुरंत गणित पढ़ाना न शुरू कर दें कि भाषा की घंटी खत्म हुई, अब गणित की घंटी में गणित ही पढ़ाना है। समय सारिणी में लचीलापन बरतना ज़रूरी है।

ज़रूरी है धीरज

नन्हे-मुन्ने जब पहली बार स्कूल जाते हैं तो कभी-कभी उनका मन नहीं लगता, रोना शुरू कर देते हैं, कक्षा में पढ़ाई में उनका ध्यान नहीं लगता, अपनी बात कहने में कुछ बच्चे काफ़ी वक्त लगाते हैं, इन सबसे आसानी से वही शिक्षक पार पा सकता है जिसमें धीरज का गुण हो। बच्चों की बात को पूरी तन्मयता और धैर्य से सुनें। गतिविधि कराते समय आपने गोले में खड़े होने के लिए कहा और बच्चे आपके अनुसार बताए गोले में न खड़े होकर आड़े-तिरछे हों तो डाँटिए नहीं। नन्हे बच्चे धीरे-धीरे स्वत: सीख जाएँगे। बच्चे की बात सुनें, अपनी बात मनवाने का उतावलापन ठीक नहीं।

बच्चे की प्रतिभा की परख

हर बच्चे में कोई न कोई हुनर ज़रूर होता है। कई बच्चे ऐसे परिवारों से आते हैं जहाँ कई बार माता-पिता के पास इतना समय नहीं होता है कि वे बच्चों की प्रतिभा को पहचानें, तो कई बार अभिभावक के पास पारखी नज़रिए का अभाव होता है। कक्षा में प्रत्येक बच्चे के हुनर की पहचान करने तथा विकसित करने की चुनौती का सामना भी शिक्षक को करना है।

जेंडर का मुद्दा

कक्षा में प्रत्येक बच्चे को चाहे वह लड़का हो या लड़की किसी-न-किसी गतिविधि में नेतृत्व का मौका ज़रूर दें। कार्य में अगुवाई करने से बच्चे में बचपन से ही निर्णय लेने तथा नेतृत्व की क्षमता का विकास होगा।

कक्षा में प्रत्येक गतिविधि में लड़के-लड़की दोनों को समान अवसर दें। जेंडर का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है। कक्षा की व्यवस्था, कक्षा में दीवारों पर लगी सामग्री तथा शिक्षण के दौरान भी इस बात के प्रति सजग रहना होगा कि लड़के-लड़की दोनों के साथ समानता का व्यवहार हो रहा है, उन्हें समान गरिमा और अवसर दिए जा रहे हैं।

बच्चे की भागीदारी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता की संस्तुति करती है। वास्तव में सीखने के दौरान बच्चों की भागीदारी निरंतर बनी रहे तो सीखना बच्चों को नीरस और उबाऊ नहीं लगता है बल्कि सीखने की प्रक्रिया उनके लिए आनंदमय बन जाती है और कुछ करते-करते वे कब सीख लेते हैं, उन्हें इसका भान भी नहीं होता है।

अनुशासन का बदलता पैमाना

अनुशासन के नाम पर बच्चों को हैंडस् डाउन, फिंगर ऑन योर लिप्स, हाथ बाँधकर चुपचाप बैठा देने से कक्षा में निष्क्रियता और बोझिलता पसर जाएगी। सक्रियता बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उन्हें स्वयं कुछ करने, बाहर जाकर पेड़-पौधों आदि का अवलोकन करने, आपस में बातचीत करने के अवसर देने से ही तो वे स्वयं ज्ञान की रचना कर पाएँगे। बच्चे सक्रिय रहेंगे तो कुछ न कुछ करेंगे, सीखेंगे। सीखने की दशा में अनुशासनहीनता का तो सवाल ही नहीं उठता है। अनुशासन को मापने का पैमाना बदलना होगा।

प्रगति की जाँच

बच्चों की प्रगति की जाँच सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। पहली कक्षा में बच्चों की प्रगति की तुलना अन्य बच्चों से करने की भूल कदापि नहीं करें। इससे बच्चों में हीन भावना जन्म लेगी और वह हतोत्साहित हो जाएँगे बच्चों की प्रगति की जाँच उनकी पहले की प्रगति से तुलना करते हुए करें। जानने का प्रयास करें कि उन्होंने पहले से कुछ ज़्यादा अच्छा किया है या वह पहले की तुलना में पिछड़ गए हैं। कहाँ पर सुधार की ज़रूरत है? अच्छा करने पर बच्चों की सराहना ज़रूर करें। अच्छा न करने पर उन्हें डाँटे नहीं, बल्कि सहारा दें, आगे अच्छा करने को प्रोत्साहित करें। आपसे मिला सहारा ही आगे अच्छे प्रदर्शन के लिए उसका संबल बनेगा।

अभिभावकों से संवाद

पहली कक्षा के शिक्षक के लिए बहुत ज़रूरी है

कि बच्चों के अभिभावकों से भी उसका संवाद लगातार बना रहे। गृह शिक्षक के रूप में अभिभावक की भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। बच्चों के संबंध में शिक्षक और गृह शिक्षक यानी अभिभावक दोनों सजग रहें और दोनों का ही पर्याप्त स्नेह और उचित मार्गदर्शन बच्चे को मिले तो पहली कक्षा बच्चे के लिए विद्यालयी जीवन का एक सुखद अहसास बन सकती है।

❑❑❑